Increasing use of plastic, causing a threat to the environment

श्रीमती सम्पतिया उइके (मध्य प्रदेश) : माननीय सभापति महोदय, हमारे देश में प्लास्टिक से बनी सामग्री के लगातार बढ़ते उपयोग से प्रकृति का भूमिगत एवं जलवायु संतुलन और उसकी उर्वरक शक्ति के साथ-साथ पर्यावरण एवं भूमि क्षरण का भारी खतरा उत्पन्न हो गया है। प्लास्टिक के उपयोग पर मनुष्य की निर्भरता एवं उसके नष्ट न हो पाने की विषय परिस्थितियों ने एक बड़ा संकट पैदा कर दिया है।

महोदय, दैनिक जीवन में प्लास्टिक की प्लेट, कटोरी, चम्मच, गिलास, पानी की बोतल और डिब्बों आदि से मनुष्य के शरीर के अंदर प्लास्टिक के हानिकारक कणों का प्रवेश आसान हो गया है। निरन्तर बड़ी संख्या में प्लास्टिक के कचरे ने हमारी नदियों, तालाबों और कुओं आदि को न केवल विषाक्त किया है, बल्कि हमारे उपयोग के जल को भी प्रदूषित कर दिया है।

महोदय, दैनिक उपयोग में प्रयोग की जाने वाली वस्तुओं में प्लास्टिक के उपयोग पर तत्काल रोक लगाए जाने की आवश्यकता है और प्लास्टिक के वैकल्पिक साधनों, जैसे कागज़ के बैग एवं उनकी पैकिंग, मिट्टी के बर्तनों के उपयोग एवं अन्य धातुओं जैसे ताम्बा, पीतल, स्टील आदि से बने बर्तनों के उपयोग को बढ़ावा दिए जाने की आवश्यकता है।

मैं आपके माध्यम से सरकार से निवेदन करना चाहती हूं कि इस विषय पर विचार करते हुए प्लास्टिक के कचरे की समस्या का निदान करने की आवश्यकता है। महोदय, पहले शहरों में इसका उपयोग होता था और ग्रामीण क्षेत्रों में मिट्टी के बर्तनों का ज्यादा से ज्यादा उपयोग होता था। आज वह लुप्त होने की स्थिति में है। इसलिए मैं आपके माध्यम से प्रार्थना करना चाहती हूं कि इसमें ऐसी वैकल्पिक व्यवस्था की जाए, धन्यवाद।

श्री रणविजय सिंह जूदेव (छत्तीसगढ़) : महोदय, मैं माननीय सदस्या द्वारा उठाए गए विषय में स्वयं को संबद्ध करता हूं।

श्री राम विचार नेताम (छत्तीसगढ़) : महोदय, मैं भी माननीय सदस्या द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को संबद्ध करता हूं।

श्री कामाख्या प्रसाद तासा (असम) : महोदय, मैं भी माननीय सदस्या द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को संबद्ध करता हूं।

श्री हरनाथ सिंह यादव (उत्तर प्रदेश) : महोदय, मैं भी माननीय सदस्या द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को संबद्ध करता हूं।

श्री रामकुमार वर्मा (राजस्थान) : महोदय, मैं भी माननीय सदस्या द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को संबद्ध करता हूं।

DR. AMEE YAJNIK (Gujarat): Sir, I also associate myself with the Zero Hour submission made by Shrimati Sampatiya Uikey.

SHRI SURENDRA SINGH NAGAR (Uttar Pradesh): Sir, I also associate myself with the issue raised by Shrimati Sampatiya Uikey.

SHRI VISHAMBHAR PRASAD NISHAD (Uttar Pradesh): Sir, I also associate myself with the issue raised by Shrimati Sampatiya Uikey.

Need to recognise the persons working in the Central Government Schemes as 'Workers'

SHRI ELAMARAM KAREEM (Kerala): Hon. Chairman, Sir, more than one crore workers engaged in different schemes of the Central Government, such as Anganwadi, ASHA, SSA, Mid-Day-Meal Scheme, etc. Most of them are women and coming from very poor sections of the society. They are getting a meagre remuneration in the name of honorarium. There is a long-pending demand to recognize them as workers.

Sir, the 45th Session of the Indian Labour Conference had recommended to recognize them as workers and extend social security and other benefits and not to privatize this sector. But, I am sorry to say that this recommendation has not been implemented so far.

I urge, through you, Sir, the Government of India to implement the recommendation of the 45th Indian Labour Conference. Thank you.

DR. AMEE YAJNIK (Gujarat): Sir, I associate myself with the Zero Hour submission made by hon. Kareem.

SHRI BINOY VISWAM (Kerala): Sir, I also associate myself with the Zero Hour submission made by my colleague, Mr. Kareem.

SHRI M. SHANMUGAM (Tamil Nadu): Sir, I also associate myself with the Zero Hour submission made by Shri Kareem.

श्रीमती जया बच्चन (उत्तर प्रदेश) : महोदय, मैं माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को संबद्ध करती हूं।

श्री रवि प्रकाश वर्मा (उत्तर प्रदेश) : महोदय, मैं भी माननीय सदस्य द्वारा उठाए गए विषय से स्वयं को संबद्ध करता हूं।